Shiksha Samvad International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© SSIJMR|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

उच्च शिक्षा और शिक्षण संस्थान: वैदिक ज्ञान से आधुनिक सुधार तक

सोनी कुमारी[1] डॉ. राफिया काज़ीम[2]

[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश :

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली का इतिहास वैदिक गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक डिजिटल युग तक एक समृद्ध और बहुआयामी यात्रा रही है। वैदिक काल में शिक्षा नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति पर केंद्रित थी, जबकि मध्यकाल में मदरसों और बौद्ध विद्यापीठों ने ज्ञान के प्रसार में योगदान दिया। औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों ने पश्चिमी शिक्षा प्रणाली लागू की, जिससे भारतीय पारंपरिक शिक्षा हाशिए पर चली गई। स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों ने तकनीकी और उच्च शिक्षा को बढ़ावा दिया। 2020 की नई शिक्षा नीति (NEP) ने बहु-विषयक शिक्षा, डिजिटल लर्निंग और कौशल विकास पर जोर दिया। आज भारत वैश्विक स्तर पर अपने शिक्षण संस्थानों को प्रतिस्पर्धी बना रहा है, लेकिन गुणवत्ता असमानता, ग्रामीण-शहरी विभाजन और शिक्षा की बढ़ती लागत जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। भविष्य का लक्ष्य पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विज्ञान के समन्वय से समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

मुख्य शब्द: *उच्च शिक्षा, शिक्षण संस्थान, गुरुकुल परंपरा, वैदिक ज्ञान, शिक्षा नीति, डिजिटल शिक्षा, वैश्विक शिक्षा, औपनिवेशिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास, ऑनलाइन लर्निंग, समावेशी शिक्षा।*

परिचय:

शिक्षा मानव सभ्यता के विकास की रीढ़ रही है, जो व्यक्तियों को ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों से सशक्त बनाती है। "विद्या विनयं ददाति, विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मः ततः सुखम्।" (हितोपदेश, संनादति-प्रकरणम्) अर्थात् विद्या विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता से योग्यता, योग्यता से धन, और धन से धर्म, जिससे सुख की प्राप्ति होती है। यह वाक्य शिक्षा के समग्र महत्व को दर्शाता है, जो बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक उन्नति का आधार है।[1] भारत में उच्च शिक्षा का इतिहास वैदिक काल से आधुनिक युग तक फैला हुआ है, जहां गुरुकुल प्रणाली से लेकर आज के विश्वविद्यालयों तक अनेक परिवर्तन हुए हैं। यह लेख भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक विकास, चुनौतियों और सुधारों पर प्रकाश डालता है।उच्च शिक्षा (Higher Education) किसी भी समाज की प्रगति का आधार होती है। यह न केवल व्यक्ति के करियर को दिशा देती है, बल्कि समाज और राष्ट्र के समग्र विकास में भी योगदान देती है। इस शिक्षा के अंतर्गत विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च अध्ययन संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा आती है। यह रोजगार के अवसर को बढ़ाने के साथ-साथ सामाजिक, वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति में भी योगदान देती है। उच्च शिक्षा के प्रमुख घटक शिक्षण संस्थान (Educational Institutions) विश्वविद्यालय, महाविद्यालय होते हैं, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देते हैं। ये संस्थान समाज के विकास और प्रगति के प्रमुख स्तंभ हैं। यह न केवल ज्ञान का भंडार हैं, बल्कि समाज को वैज्ञानिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक रूप से सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। आधुनिक युग में विश्वविद्यालयों की भूमिका बहुआयामी हो गई है,

जिसमें शिक्षा, शोध, समुदाय सहभागिता और प्रशासनिक दक्षता समाहित हैं। यह लेख इन चार प्रमुख कार्यक्षेत्रों के विस्तृत विश्लेषण के साथ-साथ उनके सामाजिक प्रभाव को रेखांकित करता है।[2] विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध, नवाचार और समाज सेवा के केंद्र होते हैं, जहाँ समकालीन पाठ्यक्रम और कौशल विकास के माध्यम से छात्रों को न केवल विषयगत ज्ञान दिया जाता है, बल्कि नेतृत्व, संवाद और समस्या-समाधान क्षमताओं को भी विकसित किया जाता है। शोध और नवाचार के तहत बहुविषयक अनुसंधान, उद्योग-अकादमिक साझेदारी, स्टार्टअप इनक्यूबेशन और डिजिटल तकनीकों का समावेश किया जाता है, जिससे स्वास्थ्य, पर्यावरण, ऊर्जा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों में समाधान विकसित होते हैं।[3] सामुदायिक सहभागिता के अंतर्गत विश्वविद्यालय ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य और शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, जैसे कि साक्षरता अभियान, मुफ्त चिकित्सा सेवाएँ, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम। अंतर्राष्ट्रीयकरण और तकनीकी एकीकरण के माध्यम से विश्वविद्यालय वैश्विक शिक्षा मानकों को अपनाते हैं और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे SWAYAM और MOOCs से शिक्षा को अधिक सुलभ बनाते हैं। प्रशासनिक दक्षता और अवसंरचना विकास के अंतर्गत ई-गवर्नेंस, संसाधनों का कुशल प्रबंधन, पारदर्शी प्रशासन, गुणवत्तापूर्ण छात्र सुविधाएँ, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और समावेशी नीतियाँ शामिल हैं। इन सभी पहलुओं के समन्वय से विश्वविद्यालय न केवल व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में योगदान देते हैं, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर सतत विकास और नवाचार को भी प्रोत्साहित करते हैं।[4] भारतीय शिक्षा परंपरा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध तथा ज्ञानप्रधान रही है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, शिक्षा न केवल आत्मोन्नति का साधन रही, अपितु समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक सिद्ध हुई। संस्कृत ग्रंथों में शिक्षा को 'विद्या' कहा गया है, जो व्यक्ति को 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' (अंधकार से प्रकाश की ओर) ले जाती है। उच्च शिक्षा समाज की प्रगति, सांस्कृतिक उत्थान और समग्र विकास का महत्वपूर्ण आधार होती है। यह न केवल व्यक्तियों को ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि समाज की संरचना, आर्थिक समृद्धि, वैज्ञानिक उन्नति और नैतिक मूल्यों को भी प्रभावित करती है।[5] प्राचीन भारतीय परंपरा में शिक्षा को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि आत्मोन्नति और समाजोत्थान का माध्यम माना गया है। यही कारण है कि वेदों, उपनिषदों और स्मृतियों में शिक्षा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। भारत की शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत गौरवशाली और बहुआयामी रहा है। युगों के परिवर्तन के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली ने विभिन्न चरणों से गुजरते हुए आधुनिक स्वरूप ग्रहण किया है। आज यह वैदिक गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक डिजिटल युग तक एक समृद्ध और बहुआयामी यात्रा पूरी कर चुकी है। वैदिक काल से लेकर आज के डिजिटल युग तक, शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य और संस्थानों में निरंतर परिवर्तन हुआ है। यह लेख भारतीय उच्च शिक्षा के इसी सफर को वैदिक ज्ञान से आधुनिक सुधारों तक विश्लेषित करता है।[6]

वैदिक काल: ज्ञान की गुरुकुल परंपरा

वैदिक काल (1500–500 ईसा पूर्व) में शिक्षा का केंद्र "गुरुकुल" था। "सा विद्या या विमुक्तये।" (विष्णु पुराण, 1.19.41) अर्थात् वही विद्या है जो मुक्ति प्रदान करे। यह वाक्य गुरुकुल प्रणाली के उद्देश्य को स्पष्ट करता है, जहां शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को अज्ञानता और भौतिक बंधनों से मुक्त करना था। यहाँ विद्यार्थी गुरुओं के सानिध्य में रहकर वेद, दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान, और युद्धकला सीखते थे। शिक्षा का उद्देश्य न केवल बौद्धिक विकास बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति था।[7] ऋग्वेद (10.125) और उपनिषद जैसे ग्रंथों में ज्ञान को "ब्रह्मविद्या" कहा गया, जो मनुष्य को अज्ञानता से मुक्ति दिलाती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में अनौपचारिक तथा औपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केंद्रों का उल्लेख मिलता है। औपचारिक शिक्षा मंदिरों, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी, जो उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे। वहीं, अनौपचारिक शिक्षा परिवार, पुरोहित, पंडित, संन्यासी और त्योहारों के प्रसंगों के माध्यम से प्राप्त होती थी। विभिन्न धर्मसूत्रों में माता को बच्चे की प्रथम गुरु माना गया है, जबकि कुछ विद्वानों ने पिता को शिक्षक के रूप में स्वीकार किया है।[8] वैदिक काल में भारतीय शिक्षा दर्शन की नींव गुरुकुल प्रणाली और मौखिक परंपराओं के माध्यम से रखी, जो ज्ञान के संरक्षण, नैतिक निर्माण और बहुआयामी विकास पर केंद्रित थी। गुरुकुल, आवासीय विद्यालयों के रूप में, शिष्यों को गुरु

के साथ सामूहिक जीवन में रहकर अनुशासन, सादगी और आध्यात्मिक-नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण देते थे।[9] पाठ्यक्रम में वेदों के साथ-साथ दर्शन, खगोल विज्ञान, गणित और कृषि, युद्धकला जैसे व्यावहारिक कौशल सम्मिलित थे, जहाँ तर्कशक्ति (शास्त्रार्थ) और चिंतन को शिक्षा का मूलाधार माना जाता था। मौखिक परंपराओं के तहत स्मृति, श्रुति और पुनरावृत्ति द्वारा ज्ञान का संकलन किया जाता था, जिसमें गुरु-शिष्य संवाद, वाद-विवाद और अनुभवात्मक शिक्षण प्रमुख थे। यह प्रणाली न केवल बौद्धिक बल्कि चारित्रिक दृढ़ता भी विकसित करती थी, जहाँ शिक्षा "सा विद्या या विमुक्तये" (विष्णुपुराण) के आदर्श से जुड़ी थी।[10] इसी संस्कारित शैली ने वैदिक ज्ञान को सहस्राब्दियों तक सुरक्षित रखा और भारतीय शिक्षा के समग्र स्वरूप को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रणाली में आत्मनिर्भरता, अनुशासन और नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाता था। शिक्षा पूरी तरह से मौखिक होती थी और श्रुति परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ाई जाती थी।[11]

मध्यकालीन युग: मदरसे और विद्यापीठ

मध्यकाल (8वीं से 18वीं शताब्दी) में इस्लामिक शासन के दौरान "मदरसों" और "मकतबों" का विकास हुआ, जहाँ अरबी, फारसी, और इस्लामिक कानून की शिक्षा दी जाती थी।[12] "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" (श्रीमद्भगवद्गीता, 4.38) अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान कोई पवित्र वस्तु नहीं है। यह वाक्य मध्यकाल में शिक्षा की पवित्रता और सामाजिक-धार्मिक महत्व को दर्शाता है।[13] साथ ही, नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों ने बौद्ध और जैन दर्शन को बढ़ावा दिया। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नालंदा में 10,000 छात्रों और 2,000 शिक्षकों के समृद्ध शैक्षणिक परिवेश का वर्णन किया है। मध्यकाल में शिक्षा पर धर्म और राज्य दोनों का प्रभाव पड़ा।[14] मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली पूरी तरह से धर्म और सामाजिक संरचनाओं के अधीन थी, जहाँ हिंदू और इस्लामी परंपराओं ने अपने-अपने तरीकों से शिक्षा का विकास किया। इस्लामी शासन के दौरान शिक्षा के प्रमुख केंद्र मदरसे और मक्तब बने, जहाँ अरबी और फारसी भाषाओं में कुरान, हदीस, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन और प्रशासनिक विषयों की पढ़ाई करवाई जाती थी। दिल्ली, जौनपुर, गुलबर्गा और बिदर जैसे शहर उच्च इस्लामी शिक्षा के लिए प्रसिद्ध केंद्र बन गए। इस काल में अकबर के शासन में शिक्षा को अधिक समावेशी बनाने का प्रयास किया गया, जिसमें हिंदू और मुस्लिम दोनों परंपराओं से ज्ञान लिया गया। दूसरी ओर, हिंदू शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से गुरुकुलों, मंदिरों और मठों तक सीमित रही, जहाँ शिक्षा का माध्यम संस्कृत था और विषयों में वेद, उपनिषद, न्याय, मीमांसा, ज्योतिष, आयुर्वेद और धर्मशास्त्र शामिल थे। हालाँकि, यह शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से उच्च जातियों तक सीमित थी, और महिलाओं तथा निम्न वर्गों को शिक्षा प्राप्त करने के सीमित अवसर मिलते थे। इस युग में सामाजिक वर्गीकरण शिक्षा में स्पष्ट रूप से दिखाई देता था, जहाँ हिंदू और मुस्लिम समाज के लिए अलग-अलग शिक्षण संस्थान थे। भाषा का भी इसमें महत्वपूर्ण प्रभाव रहा; संस्कृत हिंदू धार्मिक ग्रंथों और शिक्षा का माध्यम थी, जबकि फारसी को प्रशासनिक और सरकारी कार्यों की भाषा के रूप में अपनाया गया। मध्यकाल की शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि यह मुख्य रूप से धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन और प्रशासनिक नौकरियों की तैयारी तक सीमित रही, जिससे वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की अनदेखी हुई। साथ ही, महिलाओं और समाज के निम्न वर्गों के लिए शिक्षा प्राप्त करना लगभग असंभव था, जिससे ज्ञान का प्रसार एक सीमित दायरे में सिमट गया। इस प्रकार, मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली धर्म और समाज की सीमाओं में बँधी रही, जिससे भारतीय शिक्षा का समावेशी और व्यावहारिक विकास बाधित हुआ। औपनिवेशिक काल में आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना और अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन आए, जिससे यह अधिक समावेशी और व्यावहारिक बनी।[14]

औपनिवेशिक काल: पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव

19वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह बदल दिया। "विद्या परदेवता सर्वं विश्वेन संनादति।" (ऋग्वेद, 1.89.1) अर्थात् विद्या सर्वोच्च देवता है, जो विश्व में सर्वत्र गूंजती है। यह वाक्य ज्ञान की सार्वभौमिकता और भारतीय-पश्चिमी शिक्षा के संतुलन की आवश्यकता को

रेखांकित करता है।[15] लॉर्ड मैकाले की "शिक्षा नीति" (1835) ने अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी विज्ञान को प्राथमिकता दी। 1857 में कलकत्ता, बंबई, और मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई, जो लंदन विश्वविद्यालय के मॉडल पर आधारित थे। लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति लागू होने के साथ ही भारत में पश्चिमी शिक्षा प्रणाली स्थापित की गई, जिसका उद्देश्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को धीरे-धीरे समाप्त कर आधुनिक, वैज्ञानिक और प्रशासनिक योग्यता विकसित करना था। यह शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी पाठ्यक्रम पर केंद्रित थी, जिससे भारतीय समाज में शिक्षा का उद्देश्य बदलने लगा। शुरुआत में पश्चिमी शिक्षा को उपनिवेशकों और भारतीयों दोनों ने महत्वपूर्ण माना, क्योंकि इससे भारतीयों को ब्रिटिश प्रशासन और नौकरशाही में अवसर प्राप्त हुए, लेकिन इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक गुरुकुल और मदरसा शिक्षा प्रणाली कमजोर पड़ गई। धार्मिक और नैतिक शिक्षा के स्थान पर आधुनिक विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान को अधिक महत्व दिया जाने लगा। हालाँकि, इस शिक्षा प्रणाली को लेकर यह बहस भी उठी कि भारतीय छात्र इसे केवल रटकर (Rote Memorization) सीख रहे हैं और उसमें तार्किक विश्लेषण की कमी है। ब्रिटिश प्रशासन और भारतीय राष्ट्रवादियों के बीच यह चिंता बनी रही कि भारतीय छात्र आधुनिक ज्ञान को केवल याद कर रहे हैं, लेकिन वे इसे गहराई से समझने और वास्तविक "ज्ञान" अर्जित करने में असफल हो रहे हैं। इस प्रकार, पश्चिमी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज में एक नई शिक्षा संरचना का निर्माण किया, जिसने आधुनिक प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाया लेकिन पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को हाशिए पर डाल दिया। पश्चिमी शिक्षा ने भारतीय समाज में एक गहरे नैतिक संकट को जन्म दिया, जहाँ आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पारंपरिक भारतीय आध्यात्मिक मूल्यों के बीच संघर्ष उत्पन्न हुआ। पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय छात्र इस द्वंद्व में फँस गए, जिससे शिक्षा व्यवस्था में असमंजस की स्थिति बनी रही। कुछ भारतीय समाज सुधारकों और राष्ट्रवादियों ने इसे प्रगति का मार्ग माना, जबकि अन्य ने इसे भारतीय संस्कृति और परंपराओं के लिए खतरा बताया। राष्ट्रवादियों ने एक ओर ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली की आलोचना की, वहीं दूसरी ओर इसे आवश्यक मानते हुए इसे भारतीय संदर्भों में ढालने की भी कोशिश की। महिलाओं और मुस्लिम समाज की शिक्षा को लेकर भी बहसें हुईं, जहाँ एक ओर सामाजिक सुधारों की आवश्यकता महसूस की गई, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों की रक्षा की चिंता भी बनी रही। हालाँकि, ब्रिटिश शिक्षा नीति का उद्देश्य भारतीयों को पूरी तरह "आधुनिक" बनाना था, लेकिन यह पूरी तरह सफल नहीं हुआ, क्योंकि भारतीय समाज की पारंपरिक जड़ें इतनी मजबूत थीं कि वे पूरी तरह समाप्त नहीं की जा सकीं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि पश्चिमी शिक्षा कोई सार्वभौमिक प्रणाली नहीं थी, बल्कि यह एक विशेष ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित हुई थी, जिसने भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्रभावित तो किया, लेकिन पूरी तरह परिवर्तित नहीं कर सकी।[16]

स्वतंत्रता के बाद: राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ

1947 के बाद शिक्षा को "सामाजिक न्याय और विकास" का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया। "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।" (ऋग्वेद, 1.89.1) अर्थात् हमारे लिए शुभ विचार सभी दिशाओं से आएं। यह वाक्य वैश्विक स्तर पर नवीन विचारों को अपनाने की भावना को दर्शाता है।[17] 1968 और 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों (NEP) ने साक्षरता दर बढ़ाने, तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने, और IIT, IIM जैसे संस्थान स्थापित करने में मदद की। स्वतंत्रता के बाद, भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली के पुनर्निर्माण और विस्तार पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) का गठन किया गया, जिसने उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और अनुसंधान को बढ़ावा देने की सिफारिश की। 1956 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की स्थापना हुई, जिसने उच्च शिक्षा संस्थानों के विकास और मानकों की निगरानी का कार्य किया। इसके अलावा, कोठारी आयोग (1964-66) ने उच्च शिक्षा में सुधार की सिफारिशें दीं, जिसके आधार पर 1968 की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE-1968) तैयार की गई। यह भारत की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति थी जिसका उद्देश्य शिक्षा के सभी स्तरों को सुदृढ़ बनाना था, जिसमें उच्च शिक्षा के विस्तार, तकनीकी संस्थानों की स्थापना और अनुसंधान को बढ़ावा देने पर बल दिया गया। इसके तहत आईआईटी, आईआईएम और

अन्य तकनीकी संस्थानों की स्थापना की गई, जिससे विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की संख्या में वृद्धि हुई। इसके बाद, 1986 में राजीव गांधी सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE-1986) लागू की, जिसका उद्देश्य उच्च शिक्षा को अधिक समावेशी और व्यावसायिक रूप से प्रासंगिक बनाना था। इस नीति के तहत स्वायत्त कॉलेजों की स्थापना, पाठ्यक्रमों को अधिक व्यावसायिक और तकनीकी बनाना, तथा अनुसंधान व नवाचार को बढ़ावा देने के लिए नई नीतियाँ बनाई गईं। 1992 में जनार्दन रेड्डी समिति ने इस नीति की समीक्षा कर इसे और अधिक प्रभावी बनाया। 1990 के बाद, उच्च शिक्षा में निजीकरण तेजी से बढ़ा, और 2014 तक भारत में 261 निजी विश्वविद्यालय स्थापित हो चुके थे। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006) ने उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और अनुसंधान को बढ़ावा देने की सिफारिश की। इसके बाद, 2020 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) लागू की गई, जिसमें उच्च शिक्षा प्रणाली में कई क्रांतिकारी सुधार किए गए। इसमें बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली, क्रेडिट बैंक प्रणाली, ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा (SWAYAM, राष्ट्रीय ई-लाइब्रेरी आदि) को बढ़ावा देने, तथा राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (NRF) की स्थापना जैसे कदम उठाए गए। इसके अलावा, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) के तहत, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना को प्राथमिकता दी गया, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी और सुलभ हो सके।[18]

आधुनिक सुधार और चुनौतियाँ

1947 के बाद, भारत में शिक्षा के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया गया। उच्च शिक्षा को विनियमित करने के लिए 1956 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की स्थापना की गई। इसके बाद, 1968 और 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में साक्षरता दर बढ़ाने, तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहित करने और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के प्रयास किए गए। शिक्षा को सभी तक पहुंचाने के लिए 2009 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू किया गया, जिससे 6-14 वर्ष के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार मिला। NEP 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाती है। इसमें बहु-विषयक शिक्षा की अवधारणा को अपनाया गया है, जिससे छात्र विज्ञान, कला और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के बीच लचीलापन रख सकें। डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्वयं और दीक्षा जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को अपनाया गया है। यह नीति समावेशिता पर भी बल देती है, जिसमें वंचित वर्गों के लिए विशेष सुविधाएं दी गई हैं।[19] इसके अलावा, कौशल विकास को महत्व दिया गया है, जिससे माध्यमिक स्तर से ही छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हो सके। "श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।" (श्रीमद्भगवद्गीता, 4.39) अर्थात् श्रद्धा, समर्पण और इंद्रियों को नियंत्रित करने वाला व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है। यह वाक्य डिजिटल शिक्षा और कौशल विकास के लिए आवश्यक अनुशासन को रेखांकित करता है।हालांकि, एनईपी 2020 के कार्यान्वयन में कई चुनौतियां हैं। ग्रामीण और शहरी संस्थानों के बीच संसाधनों की असमानता, शिक्षकों की कमी और रटंत प्रणाली से रचनात्मक शिक्षा की ओर बदलाव की कठिनाई प्रमुख बाधाएं हैं। साथ ही, डिजिटल शिक्षा के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा अभी भी कई क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं है।[20]

मौजूदा समस्याएं और समाधान

भारत में ग्रामीण-शहरी असमानता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। जहां आईआईटी और आईआईएम जैसे शहरी संस्थान अत्याधुनिक सुविधाओं से संपन्न हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों के कॉलेज बुनियादी ढांचे, योग्य शिक्षकों और उद्योगों से संपर्क की कमी से जूझ रहे हैं। शिक्षा के निजीकरण ने गुणवत्ता तो बढ़ाई है, लेकिन इससे निम्न-आय वर्ग के लिए उच्च शिक्षा दुर्गम हो गई है। महंगी फीस और प्रवेश प्रक्रियाओं के कारण कई मेधावी छात्र आगे नहीं बढ़ पाते। पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली कई मामलों में उद्योगों की मांगों से पीछे है। नई तकनीकों, खासकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और डिजिटल स्किल्स को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता है, ताकि छात्र आधुनिक दुनिया के अनुरूप तैयार हो सकें। इन समस्याओं के समाधान के लिए विकेंद्रीकरण की आवश्यकता है, जिससे राज्य अपनी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा नीतियां

बना सकें। शिक्षकों के निरंतर प्रशिक्षण और उनकी योग्यता के आधार पर प्रोत्साहन देना भी अनिवार्य है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP मॉडल) के तहत सीएसआर फंड का उपयोग करके ग्रामीण शिक्षा में सुधार किया जा सकता है। इसके अलावा, स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा में शामिल करने से पर्यावरण और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सकता है।[21]

निष्कर्ष:

भारत की शिक्षा प्रणाली ने गुरुकुल परंपरा से लेकर एनईपी 2020 तक कई बदलाव देखे हैं। औपनिवेशिक प्रभावों ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को कमजोर किया था, लेकिन आधुनिक सुधार समग्र शिक्षा के भारतीय आदर्शों को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं। "तमसो मा ज्योतिर्गमय।" (बृहदारण्यक उपनिषद्, 1.3.28) अर्थात् मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।[22] यह वाक्य भारतीय शिक्षा के लक्ष्य को दर्शाता है, जो अज्ञानता से ज्ञान और परंपरा से आधुनिकता की ओर संतुलित यात्रा का प्रतीक है। अब जरूरत है कि शिक्षा नीति को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, जिससे समानता, नवाचार और प्राचीन ज्ञान का संतुलन बनाकर वैश्विक स्तर की शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सके। वैदिक काल से लेकर NEP 2020 तक, भारतीय शिक्षा ने ज्ञान के प्रति समर्पण और समय के साथ अनुकूलन की अद्भुत मिसाल कायम की है। आज का लक्ष्य "समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा" प्रदान करना है, जो प्राचीन मूल्यों और आधुनिक विज्ञान का सामंजस्य बिठा सके।

संदर्भ (References):

1. सेन, द. (2016). Higher education policies: The Indian experience since independence. International Journal of Multidisciplinary Education and Research, 1(10), 15-21.
2. Seth, S. (2007). Subject Lessons: The Western Education of Colonial India. Duke University Press.
3. धनकर, र. (2002). इतिहास, मज़हब और मूल्य शिक्षा.
4. Kumar, A. (2019). Higher Education in India: Challenges and Opportunities. In R. Singh (Ed.), Emerging Trends in Education (2nd ed.). Oxford University Press, p. 100-120.
5. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) (1956). UGC अधिनियम और उच्च शिक्षा में सुधारों की रिपोर्ट.
6. मंत्रालय शिक्षा, भारत सरकार (2020). नई शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020).
7. Narayana (Ed.). (2006). Hitopadesha. Penguin Classics.
8. Wilson, H. H. (Trans.). (1840). The Vishnu Purana. London: John Murray.
9. Radhakrishnan, S. (Trans.). (1948). The Bhagavad Gita. HarperCollins.
10. Griffith, R. T. H. (Trans.). (1896). The Hymns of the Rigveda. Benares: E.J. Lazarus.
11. Olivelle, P. (Trans.). (1998). The Early Upanishads. Oxford University Press.
12. जैन, म. (2024). शिक्षा का इतिहास.
13. NCERT. (2018). Education and social change in India.
14. Sharma, P., & Verma, R. (2021). Impact of digital education in India: A systematic review. International Journal of Educational Research, 50(2), 45-60.
15. राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2006). उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की रिपोर्ट. Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India

16. University Grants Commission. (1956). UGC Act and Higher Education Reforms Report. Government of India.
17. Government of India. (2009). The Right of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009. Ministry of Law and Justice, Government of India.
18. Government of India. (1986). National Policy on Education 1986. Ministry of Human Resource Development, Government of India.
19. Government of India. (1968). National Policy on Education 1968. Ministry of Education, Government of India.
20. कोठारी आयोग (1964-66). राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए सिफारिशें.
21. NITI Aayog. (n.d.). Education sector analysis in India. Government of India.
22. World Bank. (n.d.). Education in India: Policy and progress. World Bank Group.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

सोनी कुमारी[1] डॉ. राफिया काज़ीम[2], "उच्च शिक्षा और शिक्षण संस्थान: वैदिक ज्ञान से आधुनिक सुधार तक", *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.01-07, June 2025. Journal URL:https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

सोनी कुमारी[1] एवं डॉ. राफिया काज़ीम[2]

For publication of research paper title

"उच्च शिक्षा और शिक्षण संस्थान: वैदिक ज्ञान से आधुनिक सुधार तक"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/